

गोस्वामी तुलसीदास के ब्रजकाव्य में रुढिवादित और बोली अनुरक्षण का मूल्यांकन

Rafik

Research Scholar
Sunrise University
Rajasthan

Dr.R.K.Dixit

Supervisor
Sunrise University
Rajasthan

सार—

भाषा और संस्कृति के सन्दर्भ में भाषारूपों का विवेचन वर्तमान युग की प्राथमिक आवश्यकता है। तुलसी ने अपने अवधी काव्य में मध्यकालीन समाज की संस्कृति, व्यापार और राजनीति का अति संयमित और सन्तुलित रूप में परिचय दिया है। तुलसी का सम्पूर्ण काव्य समन्वय की विराट चैष्टा है। तुलसी ने अपनी ब्रज काव्यकृतियों में बहुसंस्कृतिमूलक समाज का स्वरूप किया है। बहुसंस्कृतिमूलक समाज को व्यक्त करने के लिये तुलसी ने एकल कोड का प्रयोग न करके कोड मिश्रण का समीचीन प्रयोग किया है। तुलसी द्वारा कोड मिश्रण का प्रयोग सामाजिक सहिष्णुता, धार्मिक उदारता और सांस्कृतिक अनेकरूपता को अभिव्यंजित करता है। तुलसी ने कोड मिश्रण द्वारा राष्ट्रीय एकीकरण की प्रक्रिया के साथ-साथ वैश्वीकरण की प्रक्रिया को भी प्रशस्त किया है। यही कारण है कि कोड मिश्रण पर आधृत तुलसी का ब्रज साहित्य राष्ट्रीय भौगोलिक सीमाओं का अतिक्रमण करके विश्व सीमाओं का संस्पर्श करता है। सामाजिक विषमता, राजनैतिक अदूरदर्शिता और सांस्कृतिक अपारदर्शिता किसी भी समाज को विभाजन, विश्रृंखलन और बिखराव से संबद्ध कर देते हैं। साम्राज्य विस्तार की भावना, सामन्तवादी शोषण की प्रक्रिया लोकतांत्रिक जीवन मूल्यों को विलुप्त और विनष्ट कर देती है। तुलसी ने अपने ब्रज काव्य में समान और असमान सम्बोधन शब्दों, अभिवादनपरक शब्दों, नाते-रिश्तेबोधक शब्दों के प्रयोगों द्वारा सामाजिक समानता और विषमता को दूयोतित किया है। समान सम्बोधन और अभिवादनपरक शब्द लोकतांत्रिक जीवन-मूल्यों की आधारभूमि तैयार करते हैं। और असमान सम्बोधन और अभिवादनबोधक शब्द सामन्तवादी जीवन-मूल्यों की सहजाभिव्यक्ति करते हैं। तुलसी ने अपने ब्रज काव्य में औपचारिक सम्बन्ध बोधक शब्द-प्रयोगों की अपेक्षा अनौपचारिक सम्बन्ध बोधक शब्दों के प्रयोगों पर अधिकाधिक बल दिया है। औपचारिक सम्बन्धों की अपेक्षा अनौपचारिक सम्बन्ध शान्ति, सद्भाव और समृद्धि के बोधक होते हैं। तुलसी विभिन्न भाषा प्रयोगों द्वारा समाज में एकता, सुख, शान्ति, सन्तोष और सहानुभूति और सम्पन्नता के पक्षधर थे।

प्रस्तावना—

गोस्वामी तुलसीदास ने अपनी ब्रज काव्य कृतियों में विभिन्न बोलियों और उपबोलियों का प्रयोग करके बोली अनुरक्षण की प्रक्रिया बनाने का सफल प्रयास किया है। भाषा वैज्ञानिकों का मानना है कि एक भाषा का सम्बद्ध एक क्षेत्र से होता है, यदि उस बोली को विकृत और विरूपित होने से बचा सम्भव है। तुलसी ने स्वरचित ब्रज काव्यकृतियों में पश्चिमी हिन्दी और पूर्वी हिन्दी कुछ प्रमुख बोलियों का प्रयोग किया है। साथ ही साथ रामायण का भी संकेत किया है। प्रत्येक कबीलायी पात्र मध्यकालीन ब्रज या अवधी का ही प्रयोग करता है। परन्तु सामाजिक विकास की प्रक्रिया में वह अपनी बोलियों से अवश्य ही जुड़ता है। अनेक जन-जातियाँ अपनी भाषाओं को सुरक्षित नहीं रख सकीं। भाषा-सुरक्षा जाति विशेष की महत्त्वपूर्ण सम्पदा मानी गयी है। डॉ० श्रीकृष्ण द्वारा सम्पादित 'भाषा अनुरक्षण और भाषा विस्थापन : हिन्दी के सन्दर्भ में' शीर्षक ग्रंथ में भाषा और बोली अनुरक्षण के अनेक आयामों की चर्चा की गयी है। तुलसी ने ब्रज और अवधी मध्यकालीन साहित्यिक बोलियों का प्रयोग करके इन्हें साहित्यिक प्रतिष्ठा ही प्रदान नहीं की, अपितु सजातीय सांस्कृतिक जीवन मूल्यों से भी सम्बद्ध किया है। महाकवि तुलसीदास ने अपनी विवेच्य काव्यकृतियों में ब्रज, अवधी और खड़ी बोली के जिन रूपों का प्रयोग किया है, वे आज भी ध्वनि परिवर्तन के साथ रचना और प्रयोग प्रक्रिया में विद्यमान हैं। कठोर जाति-व्यवस्था, धार्मिक कट्टरता, सांस्कृतिक संकीर्णता और सघन आवासीय व्यवस्था, बोली अनुरक्षण के प्रबल आधार हैं। तुलसी ने अपनी विवेच्य ब्रज काव्य कृतियों में इन्हीं के आधारों को इंगित किया है साथ ही साथ यह भी स्पष्ट किया है कि विदेशी शासन एवं शिक्षा पद्धति भी बोलियों और उपबोलियों को विस्थापित नहीं कर सकती।

विचारगत रूढ़िवादित

गोस्वामी तुलसीदास ने अपनी विवेच्य ब्रज काव्य कृतियों की भाषा में खान-पान, रहन-सहन, वेश-भूषा और आचार विचार से सम्बन्धित भाषा और बोली शब्दों का प्रयोग किया है। राजा-महाराजा, ऋषि-मुनि, सचिव, सेनापति, साधारण जनता और विभिन्न जनजातियाँ अपनी जीवन शैली और कार्यशैली में अस्मिता बोध बनाए परिलक्षित होती हैं। अस्मिताबोध जातीय भावना को सुदृढ़ बनाता है, लोक आस्था, लोक विश्वास, लोक संस्कृति और लोक जीवन से जुड़ाव विभिन्न स्तरों पर बोली शब्दों को प्रभावी बनाता है। देश काल और परिवेश की रक्षा ऐतिहासिक और पौराणिक आख्यानो से सम्बन्धित काव्य कृतियों से कठिन और गोचर होती है। तुलसी के रचनाकाल का समाज मुस्लिम कालीन भारतीय समाज था, फिर भी वर्ण व जाति व्यवस्था प्रभावी थी। सभी सम्प्रदाय, वर्ण, जाति, वर्ग के व्यक्ति जातीय अस्मिता की रक्षा के लिए अपनी-अपनी बोलियों का प्रयोग करते थे। खान-पान, रहन-सहन, वेश-भूषा और आचार-विचार सभी समुदायों को पृथक-पृथक थे। इनके बोधक भाषा प्रयोग भी भिन्न-भिन्न परिलक्षित हो रहे थे। भाषा-संक्रमण की स्थिति में भी बोली रक्षा का भाव सुदृढ़ बन रहा था। अतः विभिन्न सामाजिक सम्प्रदाय अपनी-अपनी बोलियों के बोधक भाषा रूपों का प्रयोग करते दिखायी दे रहे थे। उनकी सभ्यता और संस्कृति पृथक-पृथक थी। अतः सभ्यता और संस्कृति के बोधक शब्द भी अलग-अलग थे। यह अलगाव की भावना बोली अनुरक्षण का आधार बन गयी थी।

इस विवेचन की पुष्टि निम्नलिखित उदाहरणों से की जा सकती है:-

दूब दधि रोचनु कनक थार भरि भरि
आरति सँवारि बरनारि चलीं गावतीं।
लीन्हें जयमाल करकंज सोहैं जानकी के
पहिरावो राधोजूको सखियाँ सिखावतीं॥
नगर निसान बर बाजैं ब्योय दुंदभी
बिमान चढ़ि गान फैंके सुरनारि नाचहीं।
जयति जय तिहुँ पुर जयमाल राम उर
बरषैं सुमन सुर रुरे रूप राचहीं॥
जनक को पनु जयो, सबको भावतो भयो
तुलसी मुदित रोम-रोम मोद माचहीं॥
सावरों किसोर गोरी सोभापर तून तोरी
जोरी जियो जुग-जुग जुवती-जन जाचहीं॥
बलकल-बसन, धनु-बान पानि, तून कटि
रूप के निधान धन-दामिनी-बरन हैं।
पान-पकवान बिधि नाना के सँधानों, सीधो,
बिबिध बिधान धान बरत बरवारहीं।
कनक किरीट कोटि पलँग, पेटारे, पीठ
काढ़त कहार सब जरे भरे भा रहीं॥
प्रबल अनल बाढ़े जहाँ काढ़े तहाँ डाढ़े,
झपट-लपट भरे भवन भँडारहीं॥
तुलसी अगारु न पगारु न बजारु बच्चो,
हाथी हथसार जरे घोरे घोर सारहीं॥

धार्मिक कट्टरता एवं सामाजिक असहिष्णुता

समाज भाषा वैज्ञानिकों का मानना है कि बोली की अनुरक्षा, सामाजिक असहनशीलता, धार्मिक कट्टरता और सांस्कृतिक संकीर्णता के द्वारा ही सम्भव है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र चारों वर्णों की अस्मिता, उच्च मध्य व निम्न वर्गों की प्रतिष्ठा, विविध जातियों के अस्तित्व से सम्बन्धित बोलियों और उपबोलियों की रक्षा कर सकती है। सामाजिक असहिष्णुता, धार्मिक अनुदारता और सांस्कृतिक संकीर्णता बोली अनुरक्षण के सबल आधार हैं। धार्मिक रीति रिवाजों, परम्पराओं और प्रथाओं से मोह, जीवन-शैली एवं कार्यशैली विशेष के प्रति आकर्षण और लगाव बोलियों की रक्षा कर सकते हैं, करते हैं, और कह रहे हैं। तुलसीदास ने शैव-शाक्त और वैष्णव, निर्गुण और सगुण आदि सम्प्रदायों का उल्लेख किया है। प्रत्येक सम्प्रदाय की अपनी-अपनी मान्यताएँ एवं मर्यादाएँ रही हैं, सम्प्रदाय विशेष से सम्बद्ध व्यक्ति

उससे जुड़े रहने का सदैव प्रयत्न करता है और इस प्रयत्न के द्वारा ही वह अपनी बोली विशेष को विस्थापन की प्रक्रिया से रोक सकता है। तुलसीदास ने संकीर्ण एवं प्रगतिशील दोनों प्रकार की सामाजिक-सांस्कृतियों का निरूपण किया है। इन से जुड़कर ही बोली और उपबोलियों को बचाया जा सकता है, तुलसी लोक सेवी रचनाकार हैं वे इस भेद से भली-भाँति परिचित हैं कि पृथक-पृथक बोलियों और उपबोलियों के द्वारा ही लोक-संस्कृति को विचलन की प्रक्रिया से रोका जा सकता है।

अस्मिता और निष्ठा बोली

गोस्वामी तुलसीदास ने स्वरचित ब्रज काव्यकृतियों में जिस बोलियों और उपबोलियों का प्रयोग किया है, उनकी रूप रचना पर सर्वाधिक बल दिया है। पृथक-पृथक बोली और उपबोली भाषी अपनी अपनी बोलियों के प्रयोगों द्वारा बोली निष्ठा और बोली अस्मिता का परिचय देते हैं। डॉ० श्रीकृष्ण द्वारा सम्पादित ग्रन्थ 'भाषा अनुरक्षण तथा भाषा विस्थापन' (हिन्दी के सन्दर्भ में) की भूमिका में लिखा है कि बोली विशेष प्रतिनिष्ठा और बोली अस्मिता की रक्षा बोली-अनुरक्षण के सशक्त आधार है। तुलसी ने स्वकाव्य में ब्रज और अवधी का प्रयोग किया है। ब्रज और अवधी दोनों ही बोलियाँ सुनने समझने और बोलने के स्तर पर अद्भुत समानता रखती हैं। प्रत्येक बोली, भाषी अपनी बोली के लोकगीत, गीत और कहानियाँ आदि विशेष उत्सवों पर सुनता, सुनाता और गुन-गुनाता दिखायी देता है। इस प्रकार का बोली के प्रति विशेष लगाव व आत्मीयता सम्बन्धित बोलियों की रक्षा करते हैं। तुलसीदास ने यह स्पष्ट संकेत किया है कि बोली अस्मिता की रक्षा, बोली के प्रति रुझान, लग्न आत्मीयता और घनिष्टता से ही सम्भव है। भले ही विभिन्न सामाजिक प्रयोजनों का संरक्षण पाकर कोई बोली शासन-प्रशासन से जुड़ जाए। कोई शिक्षा और साहित्य से सम्पन्न हो जाए, परन्तु फिर भी अपनी बोली और दूसरी बोली से महत्वपूर्ण मानना प्रत्येक बोली भाषी का कार्य है। लोक बोली शासकीय व्यवहार से जुड़कर बहुमुखी बन जाती है। तुलसीदास ने यह संकेत किया है कि प्रत्येक बोली समुदाय, बोली संलग्नता द्वारा बोली को रखना चाहता है।

आवासीय व्यवस्था

भाषा वैज्ञानिक की मान्यता है कि सघन आवासीय व्यवस्था बोली अनुरक्षण का महत्वपूर्ण आधार होता है। एक जाति, एक सम्प्रदाय और एक सम्प्रदाय के लोग एक ही स्थान पर सघन आवासीय व्यवस्था से जुड़कर बोली की रक्षा कर सकते हैं। तुलसी ने स्वरचित ब्रज काव्य कृतियों की भाषा में विभिन्न बोलियों और उपबोलियों का प्रयोग करके स्पष्ट रूप से यह संकेत किया है कि इन बोलियों और उपबोलियों की परम्परा दीर्घकाल से चली आ रही है। ब्रज, अवधी और खड़ी बोली का प्रयोग मध्यकाल से बहुत पहले सातवीं शताब्दी शताब्दी से भारतीय समाज में प्रचलन और प्रयोग में थी। भक्तिकालीन साहित्य से पूर्ववर्ती साहित्य सिद्ध साहित्य, नाथ साहित्य, जैन साहित्य और लौकिक साहित्य आदि में इन बोलियों का प्रयोग होता रहा है।

निष्कर्ष-

मध्यकालीन भारतीय समाज में इन दोनों बोलियों का प्रयोग सर्वाधिक हो रहा था। भाषायी दृष्टि से कवि ने सहज और स्तरानुकूल, पात्रानुकूल और भावानुकूल भाषा का चयन किया है। कवि ने संस्कृत, प्राकृत-अपभ्रंश, अरबी-फारसी, अवधी, ब्रज, कन्नौजी, खड़ी बोली व भोजपुरी आदि भाषाओं और जनपदीय बोलियों का प्रयोग किया है जिससे समग्र समाज तक कवि का कथ्यगत संदेश सम्प्रेषित हो गया है। ऐसे भाषा प्रयोगों के कारण तुलसी विरचित काव्यकृतियाँ न केवल भारत की सीमाओं का संस्पर्श करती हैं वरन् विश्व सीमाओं का भी संस्पर्श करती हैं। वे सम्पूर्ण समाज व मानवतावादी कवि हैं, जिनके काव्य में समग्र समाज का कल्याण निहित है। यह निर्विवाद सत्य है कि तुलसीदास अपने कथ्यगत सन्देश को प्रायः सम्पूर्ण भारतीय समाज तक सम्प्रेषित करना चाहते थे, अवधी और ब्रज दोनों ही तद्युगीन विस्तृत भारतीय समाज से सम्बद्ध बोलियों रहीं हैं। विवेच्य काव्य कृतियों में तुलसी ने ब्रज, अवधी और खड़ी बोली प्रयोगों द्वारा यह स्पष्ट संकेत किया है कि सघन और विस्तृत क्षेत्रों से सम्बद्ध बोलियाँ सुरक्षित रह सकती हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची—

1. भाषा अनुरक्षण एवं भाषा विस्थापन सं० डॉ० श्री कृष्ण केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, 1986
2. आगरा की बोली डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी हिन्दुस्तान एकडेमी, इलाहाबाद
3. तुलसी दर्शन मीमांसा उदयभानु सिंह प्र०सं० सं० 2018 वि०वि०प्र०, लखनऊ वि०वि०, लखनऊ।
4. तुलसी काव्य चिन्तन अम्बाप्रसाद 'सुमन' प्रथम संस्करण, 1982, प्रकाशक ग्रंथायन, सर्वोदय नगर, सासनी गेट, अलीगढ़
5. गोस्वामी तुलसीदास आचार्य रामचन्द्र शुक्ल नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, संवत् 2008 वि०
6. तुलसी और उनका युग राजपति दीक्षित प्रथक संस्करण, सं० 2009 वि० ज्ञानमण्डल लिमिटेड, बनारस
7. तुलसीदास माता प्रसाद गुप्त छठा संस्करण, 2002, प्रकाशन हिन्दी विभाग, इलाहाबाद वि०वि०, इलाहाबाद
8. तुलसी की साहित्य साधना राम लल्लन संस्करण, 2002, वाणी प्रकाशन, 21 ए, दरियागंज, नई दिल्ली-1100021
9. जैनेन्द्र कुमार, उपन्यासों की भाषा का समाज सांदर्भिक विवेचन के०डी० गीता शर्मा चौ० चरण सिंह वि०वि०, मेरठ से पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त की।
10. समाज बोलता है, एक समाज शास्त्र अध्ययन डॉ० मदनलाल वर्मा प्रदीप प्रकाशन, आगरा, 1974